बीए अर्थशास्त्र

Semester 01 (Paper 01)

तटस्थता वक्र विश्लेषण तथा उद्घाटित अधिमान सिद्धांत

Indifference Curve Analysis and Revealed Preference Theory

उदासीनता वक्र वह वक्र है जिसका प्रत्येक बिंदु दी वस्तुओं के ऐसे संयोगों को बताता है जिससे किसी उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है

तटस्थता वक्र विश्लेषण का विकास

सर्वप्रथम विचार - अंग्रेज अर्थशास्त्री ऐजवर्थ ने 1881 में किया

विकास - पेरेटो (1906)

वैज्ञानिक सुधार एवं विकास - प्रो. हिक्स एवं आर जी डी ऐलन ने अपने लेख 'A Reconsideration of the Theory of Value' में दिया ।

क्रमवाचक तटस्थता विश्लेषण

इस विश्लेषण के अनुसार उपयोगिता की परिमाणात्मक माप नहीं की जा सकती है । इसकी सिर्फ तुलना की जा सकती है अर्थात उपभोक्ता केवल यह बता सकता है की दूसरी वस्तु से उपयोगिता कम मिलती है या समान मिलती है या अधिक मिलती है ।

इस प्रकार उपभोक्ता उपयोगिता को क्रम दे सकता है, जिसे प्राथमिकता क्रम कहते है।

उदासीनता वक्र पर अंकित प्रत्येक बिंदु उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करने वाली दो वस्तुओं के अनेक संयोगों को व्यक्त करता है।

सभी संयोगों से एक समान संतुष्टि प्राप्त होती है, इसलिए उपभोक्ता किसी विशेष संयोग के चुनाव में रुचि व्यक्त नही करता अर्थ तटस्थ रहता है।

उदासीनता वक्रों को सम संतुष्टि वक्र (Iso utility CURVE) भी कहा जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*

उदासीनता वक्र सूची (Indifference Schedule)

उदासीनता वक्र विश्लेषण के अंतर्गत उपभोक्ता को दो या दो से अधिक उपभोग वस्तुओं की पसंदगी अथवा अनुराग क्रम के आधार पर समान संतुष्टि प्राप्त करने वाले संयोगों की एक सूची तैयार की जाती है जिसे उदासीनता सूची कहते है।

संयोग क्रम	वस्तु X	वस्तु Y
A	1	20
B	2	14
C	3	10
D	4	8

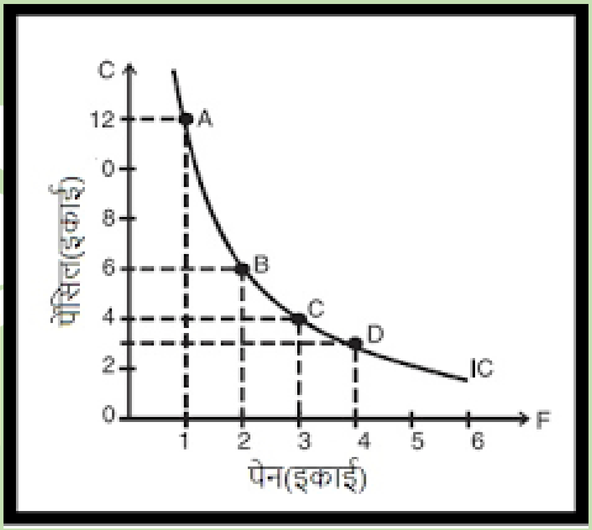

उदासीनता मानचित्र (Indifference Map)

एक उदासीनता वक्र पर उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि स्तर प्राप्त होता है।

एक उपभोक्ता के एक नही वरन अनेक उदासीनता वक्र हो सकते हैं।

प्रत्येक अलग उदासीनता वक्र पर संतुष्टि का अलग स्तर होता है।

इस प्रकार अनेक संतुष्टि स्तरों को दर्शाने वाले अनेक उदासीनता वक्र मिलकर उदासीनता मानचित्र बनाते है।

चित्र:

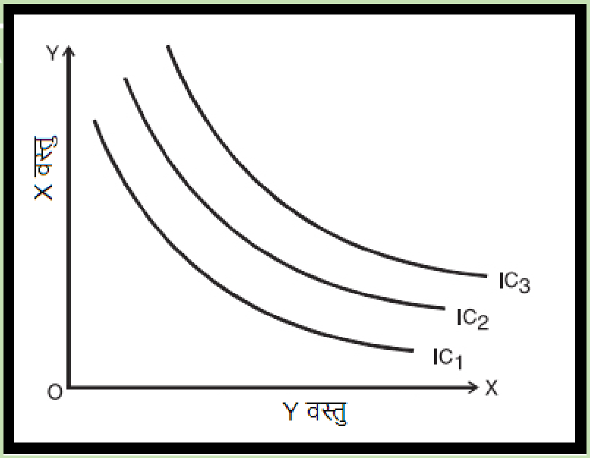

उदासीनता/ तटस्थता वक्रों को प्रकृति/ विशेषताएं:

1. उदासीनता वक्र बाएं से दाएं नीचे की ओर गिरता हुआ होता है-
   - **तटस्थता वक्र बाएं से दायें उपर की और चढ़ता नहीं हो सकता**
   - **तटस्थता वक्र X-अक्ष के समानान्तर नहीं हो सकता**
   - **तटस्थता वक्र Y अक्ष के सामानांतर नहीं हो सकता**
2. उदासीनता वक्र मूल बिंदू की ओर उन्नतोदर होते हैं
3. दो उदासीनता वक्र एक दूसरे को नहीं काटते
4. तटस्थता वक्रों का एक दुसरे के समानान्तर होना आवश्यक नहीं है
5. तटस्थता वक्र किसी भी अक्ष को स्पर्श नहीं करता
6. ऊंचे उदासीनता वक्र संतुष्टि के ऊंचे स्तर को व्यक्त करते हैं

सीमांत प्रतिस्थापन दर (Marginal Rate of Substitution)

जिस दर पर कोई व्यक्ति एक वस्तु की अतिरिक्त इकाइयों को दूसरी वस्तु की अतिरिक्त इकाइयों के साथ बदलने के लिए तैयार हो जाता है, उस दर को सीमांत प्रतिस्थापन दर कहते है।

X की Y के लिए सीमांत प्रतिस्थापन दर Y की वह मात्रा होगी जो X की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए घटायी जाती है जिससे कि उपभोक्ता का संतोष पहले के ही समान बना रहे।

MRSxy= Y वस्तु की मात्रा में कमी/ X वस्तु की मात्रा में वृद्धि

सेब (वस्तु X)	संतरा (वस्तु Y)	X की Y के लिए MRSxy
1	20	-
2	14	6:1
3	10	4:1
4	8	2:1
5	7	1:1

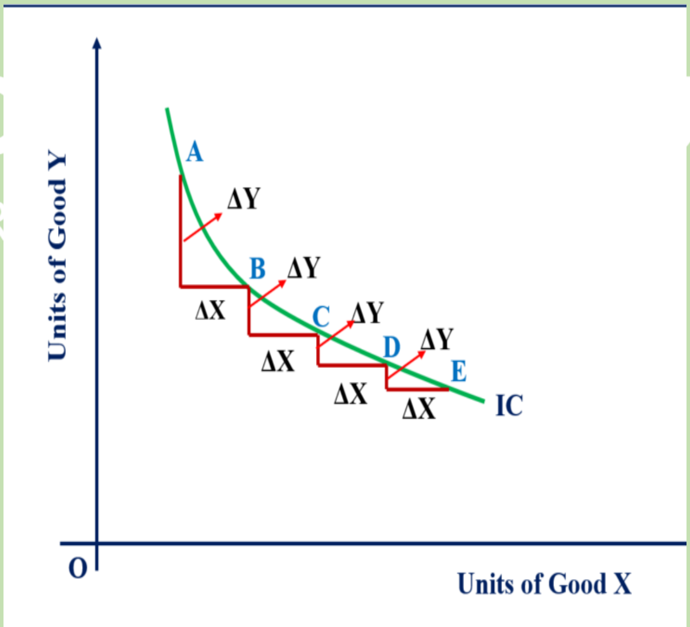

घटती हुई सीमांत प्रतिस्थापन दर
(Diminishing Marginal Rate of Substitution)

इस नियम के अनुसार किसी व्यक्ति के पास एक वस्तु की जितनी मात्रा बढ़ती जाती है, वह दूसरी वस्तु का इस वस्तु के लिए प्रतिस्थापन, घटती दर पर करता जायेगा।

एक दिष्ट अधिमान (Monotonic Preference)

एक दिष्ट अधिमान से मतलब है कि एक विवेकशील उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक मात्रा को हमेशा वरीयता देता है क्योंकि यह उसे संतुष्टि का उच्च स्तर प्रदान करती है।
साधारण शब्दों में एक दिष्ट अधिमान के अनुसार जब उपभोग बढ़ता है तो कुल उपयोगिता भी बढ़ती है।

कीमत रेखा या बजट रेखा (Price Line or Budget Line)

कीमत रेखा दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को व्यक्त करती है जो उपभोक्ता अपनी दी हुई आय एवं वस्तुओं की वर्तमान कीमत के आधार पर खरीद सकता है।

बजट सेट (Budget Set)

बजट सेट दो वस्तुओं के उन सभी संयोगों का सेट होता है जिन्हें एक उपभोक्ता अपनी दी गई आय और बाजार में कीमतों के अनुसार खरीद सकता है।

बजट रेखा समीकरण

M= Q1P1 × Q2P

संयोग	वस्तु X	वस्तु Y	व्यय की मुद्रा = आय (Y)
E	5	0	5×4+0×2= 20
F	4	2	4×4+2×2=20
G	3	4	3×4+4×2=20
H	2	6	2×4+6×2=20
I	1	8	1×4+8×2=20

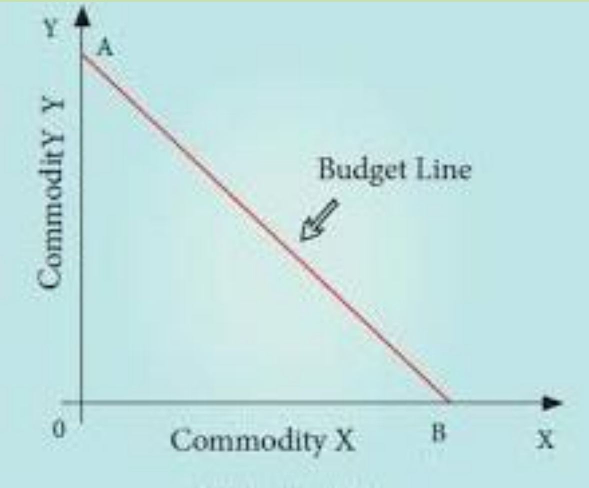

बजट रेखा : महत्वपूर्ण बिंदु

•वे बंडल जिनकी लागत उपभोक्ता की मौद्रिक आय के बराबर होती है, बजट रेखा पर स्थित होती है।

•बजट रेखा नीचे की ओर गिरती हैं क्योंकि एक वस्तु को अधिकता में दूसरी वस्तु की कुछ इकाइयों में कमी करके ही खरीदा जा सकता है

•वे बंडल जिनकी लागत उपभोक्ता की मौद्रिक आय से कम होती है, आय से कम व्यय को दर्शाते है। वे बजट रेखा के अंदर स्थित होते है।

•वे बंडल जिनकी लागत उपभोक्ता की मौद्रिक आय से अधिक होती है, उपभोक्ता को प्राप्त नही होते है वे बजट रेखा के पार होते हैं।

बजट रेखा को विशेषताएं:

- बजट रेखा नीचे की ओर गिरती हुई होती है
- बजट रेखा एक सरल रेखा होती है

उदासीनता वक्र विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता का संतुलन (Consumer's Equilibrium by Indifference Curve Analysis)

एक उपभोक्ता उस समय संतुलन की अवस्था में होता है जब अपनी सीमित आय आय की सहायता से वास्तुओं को उनकी दी गई कीमतों पर खरीदकर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है । उपभोक्ता की कीमत रेखा उसकी आय एवं उपभोग वस्तुओं के कीमतों से निर्धारित होती है । इस कीमत रेखा के साथ उपभोक्ता ऊँचे से ऊँचे उदासीनता वक्र तक पहुँचने का प्रयास करता है ।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

उदासीनता वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता के संतुलन की शर्ते है -

1. उदासीनता वक्र कीमत रेखा को स्पर्श करें -

अर्थात मात्रात्मक रूप में X वस्तु की Y वस्तु के लिए सीमांत प्रतिस्थापन दर X और Y वस्तुओं की कीमतों के अनुपात के बराबर होनी चाहिए ।

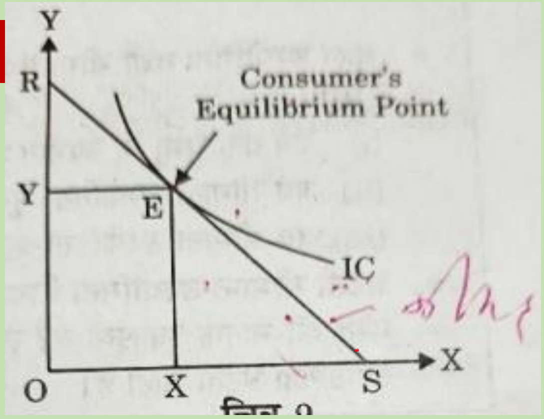

MRSxy = Px / Py

www.theeconomicsguru.com

2. स्थायी संतुलन के लिए संतुलन बिंदु पर उदासीनता वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होनी चाहिए । अर्थात संतुलन बिंदु पर MRS घटती हुई होनी चाहिये ।

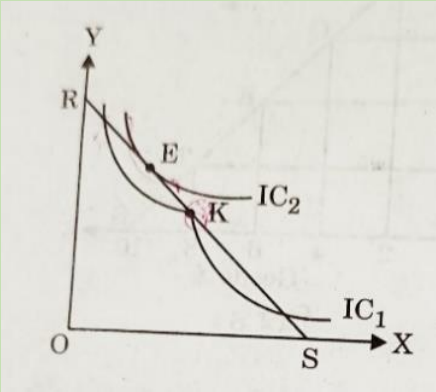

उद्घाटित पसंदगी सिद्धांत

(Revealed Preference Theory)

मार्शल की गणनावाचक तुष्टिगुण विचार एवं हिक्स - ऐलन के क्रमवाचक तटस्थता विश्लेषण के दोषों को ध्यान में रखते हुए ***प्रो. सैम्युलसन*** ने *1948* में उपभोक्ता के व्यवहार के लिए एक नवीन सिद्धांत दिया जिसे **प्रकट अभिमान सिद्धांत** कहा जाता है।

प्रो. सैम्युलसन का उद्घाटित अधिमान सिद्धांत उपभोक्ता के व्यवहार के एक वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान करता है, जिसे *उपभोक्ता की मांग को आलोचनात्मक तथा व्यवहारवादी व्याख्या (Behaviouristic Explanation)* कहा जाता है।

प्रो. तापस मजुमदार ने ***सैम्युलसन*** के इस सिद्धांत को *व्यवहारवाद क्रम संख्यात्मक* कहा।

यह सिद्धांत बाजार में हुए कीमत परिवर्तनों के परिणामस्वरूप उपभोक्ता की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है और उन्हीं के आधार पर उपभोक्ता के अधिमान के संबंध में निष्कर्ष निकालता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

इस नियम को व्यवहारवाद क्रमसूचक उपयोगिता सिद्धांत भी कहा जाता है तथा इसे कभी कभी मांग के तार्किक सिद्धांत का तीसरा मूल्य भी कहा जाता है।

उद्घाटित अधिमान सिद्धांत की मान्यता

•उपभोक्ता की रूचियों में परिवर्तन नहीं होता

•उपभोक्ता का चयन उससे अभिमान को प्रकट करता है और यह अधिमान मजबूत क्रम अथवा सफल क्रम पर आधारित है।

•दी हुई कीमत आय परिस्थिति में उपभोक्ता दो वस्तुओं के किसी एक संयोग का चयन करता है।

•किसी व्यक्तिगत उपभोक्ता से अधिक मानों से संबंधित चयन दो अवलोकनों में टकराव नहीं हो सकता।

•जब किसी भी स्थिति में कम वस्तुओं की अपेक्षा अधिक वस्तुओं के संयोग के प्रति अधिमान रखता है।

• यह **सामंजस्य** तथा **सकर्मकता** की मान्यताओं पर आधारित है।

उद्घाटित अधिमान सिद्धांत के विचार की व्याख्या तथा उपभोक्ता का संतुलन

उद्घाटित अधिमान सिद्धांत एक सरल विचार पर आधारित है।

जब एक उपभोक्ता वस्तुओं के किसी एक विशेष संयोग को खरीदने का निर्णय करता है, तो वह ऐसा दो कारणों से करेगा -

या तो उपभोक्ता एक विशेष संयोग को दूसरे सदस्यों की तुलना में अधिक पसंद करता है।

अथवा यह विशेष संयोग दूसरे की तुलना में सस्ता रहे।

संक्षेप में, इस सिद्धांत का मूल विचार यह है कि उपभोक्ता के द्वारा किया गया चुनाव उसकी पसंद को व्यक्त करता है।

उदाहरण,

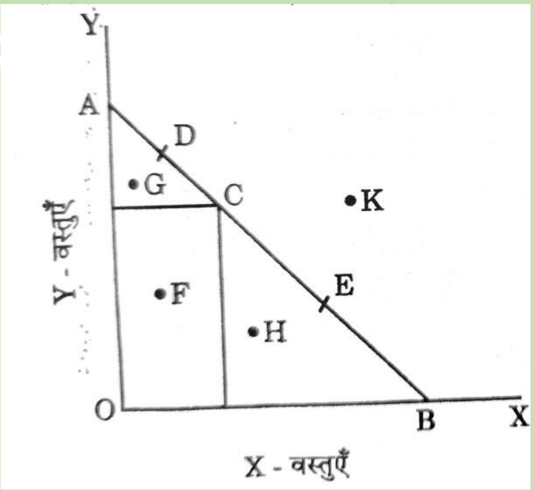

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION

उपभोग सिद्धांत का आधारभूत प्रमेय
(Fundamental Theorem of Consumer Theory)

अथवा

सैम्युलसन का मांग प्रमेय (Samuelson's Demand Theorem)

सैम्युलसन ने अपनी आधारभूत प्रमेय में कीमत और मांग के बीच विपरीत संबंध इस मान्यता के आधार पर स्थापित किया है कि **मांग की आय लोच धनात्मक** होती है।

इसका अभिप्राय है कि उपभोक्ता की आय में वृद्धि के साथ वस्तु की मांग की गई मात्रा में वृद्धि होती हैं। आय में कमी के साथ वस्तु की मांग की गई मात्रा में कमी होती है।

इस प्रकार मांग की धनात्मक आय लोच के आधार पर ***प्रो. सैम्युलसन*** ने उद्घाटित अभिमान सिद्धांत में से मांग के नियम को निकाला है।

सैम्युलसन के शब्दों में, "कोई भी वस्तु जिसकी मांग में केवल आय वृद्धि होने पर ही वृद्धि होती है, कीमत वृद्धि होने पर उसकी मांग में निश्चय ही संकुचन होगा"।

अथवा

"कोई भी वस्तु जिसकी मांग में केवल आय में कमी होने पर ही कमी होती है, कीमत में कमी होने पर उसकी मांग में निश्चित रूप से विस्तार होगा"।

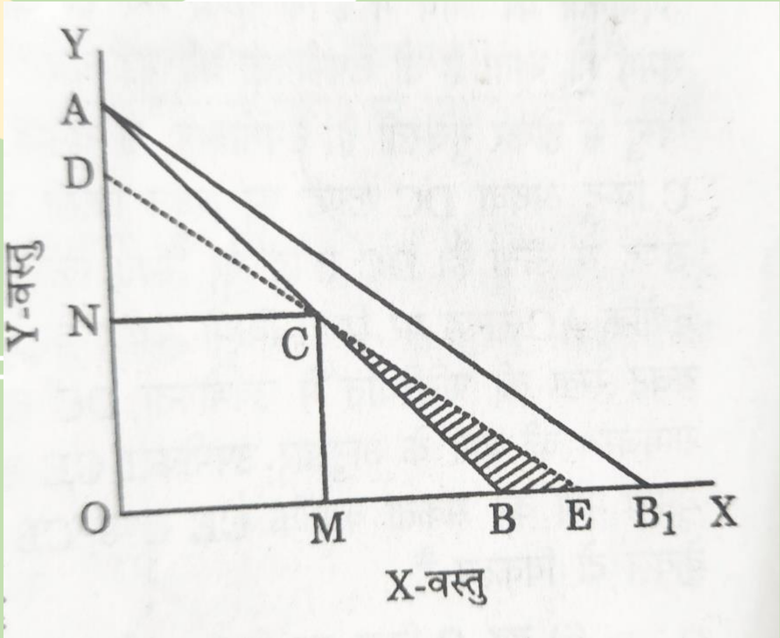

इस प्रकार ***सैम्युलसन*** के अनुसार आय और मांग में सीधा यह धनात्मक संबंध बताता है तथा मांग और कीमत में विपरीत संबंध बदलता है।

उद्घाटित अधिमान सिद्धांत के गुण

- यह पहला सिद्धांत है जो बाजार में उपभोक्ता के व्यवहार के निरीक्षण के आधार पर व्यवहारवादी विश्लेषण प्रस्तुत करता है।
- यह नियम में पुराने सिद्धांतों की व्यर्थ की मान्यताओं को हटा दिया गया है।
- इस नियम में निरंतरता की मान्यता का प्रयोग किया गया है।
- उद्घाटित अभिमान सिद्धांत में अधिकतम उपयोगिता की मान्यता का भी प्रयोग किया गया है।
- उपभोक्ता के व्यवहार के अधिक वास्तविक व्याख्या करता है।

उद्घाटित अधिमान सिद्धांत के दोष

- यह सिद्धांत उपभोक्ता को व्यवहार में उदासीनता की संभावना की अपेक्षा करता है।
- उद्घाटित सिद्धांत एक प्रतिबंधक है सामान्य नहीं।
- यह नियम गिफ़्फ़िन की विरोधाभास की व्याख्या नहीं करता है।
- इस सिद्धांत की दी हुई कीमत आय स्थिति की धारणा भी गलत है, जिसका अर्थ कि उपभोक्ता दोनों वस्तुओं में से थोड़ा थोड़ा चुनाव करता है।
- यह मांग सिद्धांत के कल्याणकारी उद्देश्य की उपेक्षा करता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL “THE ECONOMICS GURU”** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*